वेणु राजामणि
राष्ट्रपति के प्रेस सचिव

Venu Rajamony
Press Secretary to the President

सत्यमेव जयते

राष्ट्रपति सचिवालय,
राष्ट्रपति भवन,
नई दिल्ली-110004
President's Secretariat,
Rashtrapati Bhavan,
New Delhi - 110004

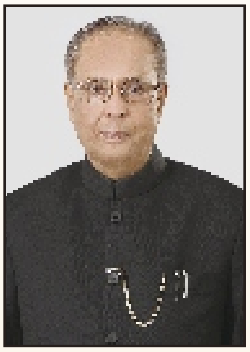

संदेश

भारत के राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा महामना पं. मदनमोहन मालवीय जी की स्मृति में '150वीं जयन्ती समारोह' का आयोजन किया जा रहा है तथा इस अवसर पर प्रज्ञा के '150वीं महामना मालवीय जयन्ती विशेषांक: द्वितीय सोपान' का भी प्रकाशन किया जा रहा है। आशा है यह विशेषांक मालवीय जी के अनुकरणीय व्यक्तित्व एवं कृतित्व को विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करेगा।

राष्ट्रपति जी इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएँ प्रेषित करते हैं।

राष्ट्रपति के प्रेस सचिव

वेणु राजामणि

Tel. +91-11-23016535 (Direct), 23015321 Extn. 4322, Fax. 23794498, E-mail-press.secy@rb.nic.in, presssecyrb@gmail.com

सत्यमेव जयते

अध्यक्ष, लोक सभा
SPEAKER, LOK SABHA

नई दिल्ली
27 अगस्त, 2012

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा अपने वरेण्य संस्थापक महान् देशभक्त, सांस्कृतिक चेतना के अग्रदूत और प्रकाण्ड पण्डित महामना मालवीय जी की 150वीं जयन्ती का आयोजन किया जा रहा है और इस अवसर को चिरस्मरणीय बनाने के लिए ''प्रज्ञा'' परिवार द्वारा ''150वीं महामना मालवीय जयन्ती विशेषांक : द्वितीय सोपान'' का प्रकाशन भी किया जा रहा है।

महान् शिक्षाविद्, बहुआयामी प्रतिभा, मेधा और अप्रतिम वाग्मिता के धनी, भविष्यद्रष्टा, ऋषितुल्य महामना का स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत को एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में विकसित करने के लिए देश को समर्पित कुशल डाक्टर, इंजीनियर, विज्ञानवेत्ता, दार्शनिक और विभिन्न विधाओं के विद्वान् तैयार करने की दृष्टि से एक राष्ट्रवादी शिक्षण संस्था का महास्वप्न काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के रूप में साकार हुआ। यह एक ही सुविशाल परिसर में अवस्थित विश्वविख्यात् आवासीय विश्वविद्यालय पूरब और पश्चिम के ज्ञान-विज्ञान का अभिनव संगम है- महामना की परिकल्पना और विचार-दर्शन का मूर्तिमन्त प्रतीक। आज देश-विदेश में यहां के विद्यार्थी शीर्ष पदों पर पदस्थापित हैं और देश का गौरव बढ़ा रहे हैं। मेरा इस विश्व विद्या मन्दिर से विशेष लगाव है, क्योंकि मेरे पूज्य बाबूजी यहीं के विद्यार्थी थे।

मैं परम् पूज्य महामना के उस महास्वप्न को, उनकी पावन स्मृतियों को प्रणाम करती हूँ। विश्वविद्यालय की उत्तरोत्तर प्रगति और स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिए शतशः हार्दिक मंगलकामनाएँ।

शुभेच्छु

मीरा कुमार (श्रीमती)

कपिल सिब्बल
KAPIL SIBAL

मंत्री
मानव संसाधन विकास,
संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी
भारत सरकार, नई दिल्ली-110 115

MINISTER OF
HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT,
COMMUNICATIONS AND INFORMATION TECHNOLOGY
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI-110 115

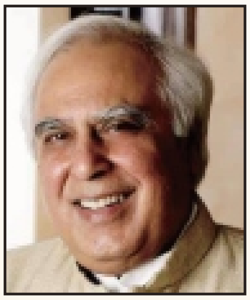

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा पूज्य महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी के **150वीं जयन्ती समारोह** का आयोजन किया जा रहा है। इस पुण्य कार्य को चिरस्मरणीय बनाने हेतु विश्वविद्यालय द्वारा अनेक प्रकार के शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। मुझे इस बात की भी खुशी है कि इस महत्वपूर्ण अवसर के उपलक्ष्य में 'प्रज्ञा' परिवार द्वारा महामना के विचारों, संकल्पों, आदर्शों एवं सपनों को साकार करने हेतु **''150वीं महामना मालवीय जयन्ती विशेषांकः द्वितीय सोपान''** का प्रकाशन किया जा रहा है।

मैं पूज्य महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी की **'150वीं जयन्ती समारोह'** के सफल आयोजन एवं **''150वीं महामना मालवीय जयन्ती विशेषांकः द्वितीय सोपान''** के सफल प्रकाशन हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

कपिल सिब्बल

(कपिल सिब्बल)

Office : Room No. 302 'C' Wing, Shastri Bhawan, New Delhi - 110 115
Phone : 91-11-23387085, 23782387, 23782698, Fax No. : 91-11-23382365, 23782028

बी. एल. जोशी
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

सत्यमेव जयते

राज भवन
लखनऊ-227 132

दिनांक : 28 जून, 2012

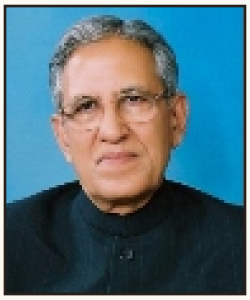

संदेश

मुझे यह जानकर अतीव प्रसन्नता हुई कि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा महामना मदन मोहन मालवीय की 150वीं जयन्ती के अवसर पर ''150वीं महामना मालवीय जयन्ती विशेषांकः द्वितीय सोपान'' का प्रकाशन किया जा रहा है।

युगपुरूष महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी भारतीय संस्कृति के अनन्य संरक्षक थे। उन्होंने चरित्र निर्माण को सर्वोपरि स्थान देते हुए युवाओं को अपनी सनातन संस्कृति के साथ आधुनिकतम ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा से समृद्ध करने के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। मालवीय जी की महान उदारता के कारण ही पूरा देश उन्हें **'महामना'** के रूप में याद करता है। उनका आदर्श जीवन दर्शन राजनीति, शिक्षा तथा समाज सेवा से जुड़े लोगों के लिए सदैव अनुकरणीय रहेगा। मैं चाहूंगा कि महामना के आदर्श जीवन दर्शन को युवा पीढ़ी पढ़े और उसे अपने जीवन में उतारे। यही उनके प्रति हम सबकी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

विशेषांक के सफल प्रकाशन हेतु मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(बी. एल. जोशी)

सत्यमेव जयते

संसद सदस्य
(राज्य सभा)
संसद उच्च सदन

डॉ. कर्ण सिंह

अध्यक्ष, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्
एवं
कुलाधिपति, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

भारतीय सांस्कृतिक
सम्बन्ध परिषद्
(आई.सी.सी.आर.)

25 अप्रैल, 2012
M/590/12

प्रतिभावन महात्मा : मदन मोहन मालवीय

संदेश

काशी विश्वविद्यालय के संस्थापक महामना मदन मोहन मालवीय भारतीय परंपरा के आधुनिक ऋषि थे। उन्होंने मातृभाषा हिन्दी को प्रतिष्ठित करने का जो महती कार्य किया वो अतुलनीय है। उन्होंने शिक्षा की महता को समझा और राष्ट्र की विकास परंपरा को अक्षुण्ण रखने के लिए शिक्षा के इस अद्भुत मंदिर की स्थापना की। महामना एक ऐसे समाज की कल्पना करते थे जिसमें समरसता हो और उनका जीवन इसी काम के लिए पूरी तरह समर्पित रहा। हिंदी उनके लिए स्वदेश की भावना प्रसारित करने का सर्वोत्तम साधन थी। उन्होंने हिन्दी में छपी अनन्त ऊर्जा को पहचाना और राष्ट्रभाषा को अनुप्रमाणित करने के लिए इस ऊर्जा को निरंतर जन-मन में संचरित करते रहे।

हिंदी को राष्ट्र की आत्मा सिद्ध करने के लिए मालवीय जी ने कमर कस ली थी। इसके लिए उन्होंने बालकृष्ण भट्ट का सहयोग लिया। उन्ही के प्रयास से भारती भवन पुस्तकालय की स्थापना हुई जहाँ हिंदी की पुस्तकें खरीदी जा सकती थीं। हालांकि योरोपियन भाषाओं की पुस्तकें भी थी लेकिन वो केवल दान में प्राप्त की जा सकती थीं। मालवीय जी भारती भवन को हिंदी के एक अध्ययन केन्द्र के रूप में स्थापित करना चाहते थे और इसके लिए वो जीवन पर्यन्त प्रयत्न करते रहे। मालवीय जी काशी नागरी प्रचारणी सभा से जुड़े रहे। महामना मालवीय कदाचित पहले व्यक्ति थे जिन्होंने हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए एक जन आन्दोलन की संकल्पना को साकार रूप दिया।

मालवीय जी का मानना था कि सभी भारतीय भाषाएँ आपस में बहने हैं तथा हिंदी उनमें बड़ी बहन है। अन्य प्रादेशिक भाषाओं की अपेक्षा हिंदी बोलने वालों की संख्या अधिक है अतः देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी भाषा को राष्ट्र भाषा का स्थान दिया जाना चाहिए। उन्होंने हिंदी को उच्च शिक्षा का माध्यम बनाने पर भी बल दिया। उन्होंने आशा व्यक्त की कि एक दिन ऐसा आएगा जब अंग्रेजी की तरह हिंदी भी विश्व भाषा बनेगी। इस तरह से भाषिक एकता और भाषाई सर्वोच्चता के माध्यम से वो भारत को एक महान राष्ट्र के रूप में स्थापित करने की आकांक्षा को भी पुष्ट करते रहे।

मालवीय जी का व्यक्तित्व एक ऐसे प्रतिभावान महात्मा का था जो एक उत्कृष्ट साहित्यकार, संपादक, कवि, आलोचक, अध्यापक, प्रबंधक, भाषाविद् की योग्यताओं से समृद्ध था और उनकी प्रतिभा से आलोकित हिंदी जगत सदैव उनका ऋणी रहेगा। उनके 150वीं वर्षदिन पर सारा देश, विशेषकर वाराणसी हिन्दू विश्वविद्यालय उन्हें भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित करता है।

कर्ण सिंह

(डॉ. कर्ण सिंह)

AZAD BHAVAN, INDRAPRASTHA ESTATE, NEW DELHI - 110 002

Tel. : 23379309, 23379310 Fax : 23378639, 23378647, 23370732, 23378783, 23379509
Website : www.iccrindia.net

डा. लालजी सिंह
कुलपति

Dr. Lalji Singh Ph.D., D.Sc. (Hon.)
FNA, FASc, FNASc, FNAAS, FTWAS
Padmashri
Bhatnagar Fellow (CSIR)
Former Director, CCMB, Hyderabad
Vice-Chancellor

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
BANARAS HINDU UNIVERSITY
(Established by Parliament by Notification No. 225 of 1916)
VARANASI-221 005 (INDIA)
Phones : 91-542-2368938, 2368339
Fax : 91-542-2369100, 2369951
e-mail : vcbhu1@gmail.com, vc_bhu@sify.com
website : www.bhu.ac.in

दिसम्बर 13, 2012

शुभ संदेश

25 दिसम्बर 2012 को महामना की 150वीं जयन्ती समारोह का समापन हो रहा है। वर्षपर्यन्त चलने वाले इस भव्य समारोह को जीवन्त एवं चिरस्मरणीय बनाने हेतु विश्वविद्यालय परिवार ने अनेक विशिष्ट कार्यक्रम एवं शैक्षणिक गतिविधियों को आयोजित करता रहा है। यह प्रसन्नता का विषय है कि इसी क्रम में ''प्रज्ञा'' परिवार ने महामना को समर्पित विशिष्ट अंक-''150वीं महामना मालवीय जयन्ती विशेषांक : द्वितीय सोपान'' को प्रकाशित किया है, जिसमें महामना के जीवन के विविध पक्षों एवं उनके कर्म क्षेत्र के विभिन्न सन्दर्भों से सम्बन्धित अनेक शोध-प्रपत्र/लेख प्रकाशित हुए हैं। महामना की उपलब्धियाँ इतनी विशाल है कि उन्हें एक या दो अंकों में समेटना संभव नहीं है। प्रस्तुत अंक में महामना की उपलब्धियों एवं उनके राष्ट्रीय योगदानों की एक झलक पाठकों को अवश्य मिलेगी, ऐसा मेरा विश्वास है। महामना के आदर्शों, सिद्धान्तों एवं सपनों को हम सभी लोग अपनाएँ यही इस विशिष्ट अंक का उद्देश्य है। आशा है वृहद पाठक वर्ग में यह अंक पर्याप्त समादरणीय होगा।

''प्रज्ञा'' के इस विशिष्ट अंक के सफल प्रकाशन हेतु मैं ''प्रज्ञा'' के सम्पादन से जुड़े सभी लोगों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ और शुभकामना व्यक्त करता हूँ कि महामना को समर्पित यह विशिष्ट अंक लोगों में पर्याप्त समादृत एवं उनके जीवन में प्रेरणा का स्रोत बने।

(लालजी सिंह)

सम्पादकीय

बहुआयामी प्रतिभा के धनी महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय जी युगपुरुष एवं अमर विभूति थे। वे महान राष्ट्रभक्त एवं भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के अग्रणी नेता, राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के अविस्मरणीय सूत्रधार, सामाजिक समरसता एवं स्वदेशी अर्थनीति के प्रबल समर्थक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक चेतना के युगानुरुप पारखी, दूरदर्शी शिक्षाविद् एवं अद्भुत वाग्मिता के धनी तथा विलक्षण पत्रकार एवं संवेदनशील साहित्यानुरागी थे। उनके जीवन दर्शन का मूल आधार ईश्वर भक्ति एवं राष्ट्रप्रेम था। उन्होंने दोनों में ऐसा अद्भुत सामंजस्य स्थापित किया था कि दोनों भावनायें एक दूसरे की पूरक एवं प्रेरणास्रोत थीं। 25 वर्ष की अवस्था में ही कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन (1886 ई.) में अपनी ओजस्वी वाणी एवं अद्भुत वाग्मिता से वरिष्ठ एवं कनिष्ठ राजनेताओं को आश्चर्यचकित कर दिया। पूना पैक्ट (यरवदा पैक्ट) में उनका योगदान राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता की दृष्टि से अविस्मरणीय है, क्योंकि महात्मा गाँधी एवं डॉ. भीमराव अम्बेडकर के सम्बन्ध कटु हो गये थे। यह स्थिति राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता की दृष्टि से अत्यन्त सोचनीय थी। मालवीय जी की मध्यस्थता ने राष्ट्र को टूटने से बचाया, जिसे कभी भी भुलाया नहीं जा सकता।

सनातन धर्म एवं वैदिक संस्कृति के समर्थक होते हुए भी उन्होंने समय की माँग एवं युगानुरूप नवीन चेतना को समझा और अछूतों एवं अन्त्यजों को स्वयम् **'ॐ नारायण'** की मंत्र दीक्षा दी, जो उनकी समाजिक समरसता की दूरगामी दृष्टि का परिचायक है। उन्होंने 22 जुलाई, 1935 के गीता प्रवचन में स्पष्ट रूप से कहा था कि *''गाँव का मेहतर यदि सत्य बोलता है तो उसका आदर होता है और यदि कोई पण्डित है, पर झूठ बोलता है तो उसकी निन्दा होती है।''* वे परायी पीर के सुनने, जानने एवं अनुभव करने वाले परम भागवत एवं उदार वैष्णव थे। उनकी धार्मिक भावना इतनी उदार एवं व्यापक थी, जिसमें इस्लाम, इसाई एवं अन्य धर्मों के प्रति पर्याप्त आदर एवं सम्मान का भाव था। यही कारण था कि वे अन्य धर्मों के अनुयायियों में भी पर्याप्त आदरणीय एवं स्वीकार्य थे। मालवीय जी स्वदेशी अर्थनीति के समर्थक एवं शोषणकारी विदेशी निवेश के विरोधी थे। उनका स्पष्ट मत था कि *''यथावश्यक विदेशी पूँजी का प्रयोग एक बात है और देश के औद्योगिक एवं व्यावसायिक जीवन को विदेशी पूँजीपतियों के हाथ सौंप देना दूसरी बात है।''* कहना न होगा कि मालवीय जी की यह दूरगामी दृष्टि आज के राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में कितनी सार्थक एवं प्रासंगिक है।

महामना मालवीय जी गीता, गंगा, गाय एवं गायत्री के प्रबल समर्थक एवं सजग प्रचाारक थे। वे स्वयम् ओजस्वी वाणी में गीता के मर्म पर प्रवचन दिया करते थे और उसे जीवन के हर संकट में अपार प्रेरणा का स्रोत मानते थे। उन्होंने हरिद्वार में गंगा पर बनने वाले बाँध का सक्रिय विरोध किया और गंगा की अविरल धारा को छोड़ने के लिए अंग्रेज सरकार को विवश कर दिया। आज गंगा के अस्तित्व पर ही भयंकर संकट है, लेकिन महामना जैसा कोई प्रखर व्यक्तित्व नहीं है, जो अपनी स्वदेशी सरकार को गंगा को प्रदूषण से मुक्ति दिलाने में सफल हो सके। उन्होंने संकट के क्षणों में अनेक बार गायत्री मंत्र का यज्ञानुष्ठान किया था और सफलता पायी। गो-रक्षा अभियान में उनका योगदान आज भी स्मरणीय है। उन्होंने गोरक्षा में देश की अस्मिता की रक्षा को पहचाना था।

1936 की नासिक सभा में उन्होंने स्पष्ट कहा था कि *''हिन्दुस्तान के कल्याण के लिए गो-रक्षा अनिवार्य है। इसके बिना यह देश पुरुषार्थ को नहीं प्राप्त कर सकता।''*

शिक्षा के क्षेत्र में उनका कालजयी योगदान सर्वविदित है। प्रतीचि एवं प्राची के सुन्दर मेल से बनी सर्वविद्या की यह राजधानी आज राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय क्षितिज में अपनी यश पताका फहरा रही है। वर्ष पर्यन्त चलने वाले महामना के 150वीं जयन्ती समारोह का समापन 25 दिसम्बर 2012 को हो रहा है। ऐसे पुण्य अवसर पर महामना को समर्पित इस विशिष्ट अंक का लोकार्पण/विमोचन होने पर हमें अपार आनन्द एवं परम संतोष का अनुभव हो रहा है। इस अंक में कुल 55 शोध-प्रपत्र/लेख संग्रहित हैं; जिनमें 39 लेख हिन्दी भाषा में, 4 लेख संस्कृत भाषा में और 12 लेख अंग्रेजी भाषा में लिखे गये हैं। इस अंक की विशिष्ट उपलब्धि है कि इसमें भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पण्डित जवाहर लाल नेहरु के विचार, वर्तमान प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह का व्याख्यान, 1929 ई. में महामना द्वारा दिया हुआ अविस्मरणीय दीक्षांत भाषण, बी. एच. यू. के पूर्व कुलपति प्रो. इकबाल नारायण का लेख एवं महामहोपाध्याय पं. रेवा प्रसाद द्विवेदी जैसी अनेक महान विभूतियों के लेख/विचार संकलित हैं, जो महामना के बहुआयामी व्यक्तित्व एवं उनके अमर कृतित्व के अनेक भास्वर पक्षों पर प्रकाश डालते हैं।

''150वीं महामना मालवीय जयन्ती विशेषांकः द्वितीय सोपान'' (अंक-58, भाग-2, वर्ष 2012-13) के प्रकाशन/लोकार्पण के अवसर पर मैं सर्वप्रथम भारत के राष्ट्रपति महामहिम श्री प्रणब मुखर्जी जी के प्रति श्रद्धावनत हूँ, जिनकी शुभाशंसा से न केवल हम लोगों में अपार उत्साह का संचार हुआ है, अपितु इससे विश्वविद्यालय पर उनकी असीम अनुकम्पा का भी बोध हुआ है। वे इस महान् विश्वविद्यालय के विजिटर भी हैं, जिनके आशीर्वाद से हमें विशेष बल प्राप्त होता है। लोकसभाध्यक्षा श्रीमती मीरा कुमार, मानव विकास संसाधन मंत्री श्री कपिल सिब्बल एवं माननीय राज्यपाल उत्तर प्रदेश श्री बी. एल. जोशी की शुभकामनाओं से हम सभी अपने को गौरवान्वित अनुभव करते हैं और आशा करते हैं कि इन महान् विभूतियों के आशीर्वाद के फलस्वरुप यह विशिष्ट अंक पर्याप्त लोगों में लोकप्रिय, ग्राह्य एवं समादरणीय बनेगा। महामना के विचारों एवं सिद्धान्तों से अधिकाधिक लोग लाभान्वित एवं प्रेरित हों और उसे अपने जीवन में अपनाये यही इस अंक का मूल उद्देश्य है।

विश्वविश्रुत इस महान विश्वविद्यालय के कुलाधिपति (चांसलर) एवं भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद्, नई दिल्ली के अध्यक्ष महान चिन्तक एवं दार्शनिक डॉ. कर्ण सिंह जी का अपार स्नेह, संरक्षण एवं आशीर्वाद हमें बराबर मिलता रहा है। इस अंक हेतु उनकी दी हुई शुभाशंसा हमारे लिए अपार प्रेरणास्रोत है, अतएव मैं उनके प्रति हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ। यह विशिष्ट अंक, अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त महान वैज्ञानिक पद्मश्री डॉ. लालजी सिंह, कुलपति, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की प्रेरणा एवं कुशल मार्गदर्शन का प्रतिफल है। हम सभी उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं, क्योंकि उन्होंने न केवल अपनी शुभाशंसा दी अपितु अपने विचारों को भी इस अंक में प्रकाशित करने की अनुमति प्रदान की है। कुलसचिव, डॉ. जी. एस. यादव; वित्त अधिकारी, श्री अभय कुमार ठाकुर; डॉ. विश्वनाथ पाण्डेय, सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी तथा विश्वविद्यालय के अन्य सभी अधिकारियों को मैं धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने कई तरह से मेरी सहायता की। संरक्षक मण्डल एवं सम्पादक मण्डल के सदस्यों के सहयोग एवं परामर्श हेतु उन्हें भी मैं धन्यवाद देता हूँ। इस अंक के विद्वान लेखकों की प्रति आभार व्यक्त करना मेरा आवश्यक कर्त्तव्य है, क्योंकि उनके शैक्षणिक सहयोग के बिना इस विशिष्ट अंक का स्तरीय प्रकाशन सम्भव नहीं हो पाता। **''प्रज्ञा''** कार्यालय के श्री राजेश कुमार, श्री जयप्रकाश एवं श्री अशोक कुमार को मै दिल से धन्यवाद देता हूँ, क्योंकि इन लोगों ने क्षण-प्रतिक्षण मेरा साथ दिया। अंत में इस अंक के सुरुचिपूर्ण एवं आकर्षक प्रकाशन हेतु मैं प्रकाशक श्री अरुण कुमार सिंह, मेसर्स गौतम प्रिंटर्स, जगतगंज, वाराणसी को धन्यवाद देता हूँ, जिनके सक्रिय एवं सकारात्मक सहयोग के बिना इस विशिष्ट अंक का यथासमय प्रकाशन सम्भव नहीं हो पाता।

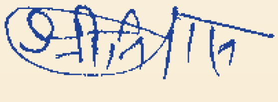

(प्रो. श्रीनिवास पाण्डेय)

सम्पादक 'प्रज्ञा' जर्नल